एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 07 (जुलाई, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

कद्दु वर्गीय सब्जियों के प्रमुख व्याधियां व कीट एवं उनका प्रबन्धन

*सुनीता चौधरी[1], स्मृति अकोदिया[2] एवं सुनील कुमार[3]
[1]कीट विज्ञान विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत
[2]पादप रोग विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, भारत
[3]आनु. एवं पादप प्रजनन विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sunitachoudhary002000@gmail.com

बीज उत्पादन में विभिन्न प्रकार की कीडों का आक्रमण होता है। कद्दू वर्गीय सब्जी फसलों में बीज उत्पादन के दौरान लगने वाले कीडों तथा उनका प्रबन्धन

कद्दू वर्गीय बीज फसलों के प्रमुख कीट

कटवर्म

यह कीट नन्हें या उगने वाले पौधों के बीजपत्रों के शीर्ष को काट देते हैं जिससे खेत में पौधों की संख्या कम हो जाती हैं इसके नियंत्रएण के लिए बीजों की बुवाई के समय या पौध रोपाई के समय दो चम्मच कार्बोफ्यूरान प्रति थमला (यानि 1.5 कि.ग्रा. /है.) के हिसाब से मिलाना चाहिऐ।

लाल भृंग

यह चमकीलें लाल रंग का कीट पौधे की पत्तियों को विशेषकर प्रारम्भिक अवस्था में खाकर छलनी जैसा बना देता है। ग्रसित पत्तियां फट जाती है। तथा पौधों की बढ़वार घट जाती है। इसके नियंत्रण के लिए कार्बिरिल का 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव प्रभावी रहता है।

ब्लीस्टर बिटिल

यह आर्कषक चमकीलें रंग तथा बडें आकार का भृंग है। इसके पंखों के ऊपर तीन काले एवं तीन पीले रंग की पट्टिंया होती है। यह पुष्प कलियों तथा फुलों को खाकर नष्ट कर देता है। अगर खेत में इनकी संख्या कम हे। तो हाथ से पकड़कर नष्ट कर देते है। लेकिन अधिक प्रकोप होने पर 0.2 प्रतिशत कार्बरिल का छिड़काव करना चाहिये।

फल मक्खी

यह कद्दू वर्गीय जाति की सब्जी फसलों में फलों पर आक्रमण करने वाला कीट है। इसके मैगट छोटे फलों में अधिक नुकसान करते है। इसके प्रकोप को करेले व तोरई में आसानी से देखा जा सकता है। इसके मैगट का सीधे नियंत्रण सम्भव नहीं है। परन्तु व्यस्क नर मक्खियों को नियंत्रित करके प्रकोप को कम किया जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए निम्न उपाय अपनाने जा सकते है।

1. खेत में रात के समय प्रकाश के ट्रेप लगायें तथा उनके नीचे किसी बर्तन में चिपकने वाला पदार्थ जैसा सीरा अथवा गुड का घोल भर कर रखें। 2–3 दिन बाद घोल को बदलते रहें।
2. नर वयस्कों को फेरामोन के ट्रेप लगाकर नियंत्रित करें।
3. ईमिडोक्लोरोपिड डाईमिथेट का 2 मिली प्रति 1 ली पानी में घोलकर छिड़काव करने से भी फलमक्खी की संख्या में कुछ कमी की जा सकती है।
4. कीट की निगरानी हेतु फसल में गन्धपाश 2 प्रति एकड के अनुसार लगायें तथा उसमें वाले ल्योर को 15–20 दिन के अन्तराल पर बदलते रहें।
5. ये छोटे आकार के काले एवं हरें रंग के होते हैं तथा कोमल पत्तियों, पुष्पकलिकों का रस चूसते हैं। इसके नियंत्रण के लिए डाईमिथाऐट, या फोसफोमिडोन (0.05 प्रतिशत) के घोल का 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये।

लाल मकड़ी घून

यह गर्मी के मौसम में खरबूजें एवं खीरे में अधिकतर आक्रमण करता है। यह बहुत छोटा तथा लाल रंग का कीट है तथा पत्त्यिों कि निचली सतह पर अधिकतर मिलते हैं। इसके नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक (0.2 प्रतिशत) या डाईकोफोल (1 मिली प्रति लीटर) पानी के घोलकर छिड़काव करें।

प्लू मोथ

हल्के हरें रंग के लार्वा पत्तियों एवं फलों पर दिखाई देते हैं। छूने से लार्वा तेज गति करता है। लार्वा को हाथ से पकड़कर नष्ट करना चाहिये।

पत्ति खाने वाली इल्ली

इल्ली पत्तियों को खाकर नुकसान पहुँचाती है। इसके नियंत्रण के लिए क्लोरोपाइरोफोस (0.5 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

कद्दू वर्गीय बीज फसलों में प्रमुख रोग

उत्पादन फसल में विभिन्न प्रकार के रोगों का आक्रमण होता है। जिससे पौधों की बढ़वार, पुष्पन, फलन, फलों के विकास एवं पकने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। कद्दू वर्गीय सब्जी फसलों में बीज उत्पादन के दौरान होने वाले प्रमुख रोगों का नियंत्रण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

चुर्णिल आसिता

इस रोग के शुरू में पत्ती की नीचली सतह पर छोटे गोलाकर सफेद रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। रोग के अधिक प्रकोप होने पर धब्बे दिखाई देते हैं। रोग के अधिक प्रकोप होने पर धब्बे आपस में मिलकर पत्ती की ऊपर सतह, तनों व डंठल पर भी फैल जाते है। पत्तियां भूरी हो जाती है। तथा सिकूडकर गिर जाती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए कार्बनडेजिम (0.1 प्रतिशत घोल) का 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें या कैराथेन की 6 ग्राम मात्रा को 10 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें या घुलनशील गंधक (सल्फर) 0.2 प्रतिशत घोल का रोग के लक्षण दिखाई पड़तें ही 10 दिन के अंतराल पर 2–3 बार छिड़काव करें।

मृदुल आसिता

इस रोग का आक्रमण अधिक आद्रता वाले स्थानों, विशेषकर जहां गर्मी में वर्षो होती हैं, में अधिक होता है। इस रोग से ग्रस्त पौधों की पत्तियों की उपरी सतह पर कोणीय आकार के पीले धब्बे बन जाते है। और पत्तियों की निचली सतहपर बैंगनी रंग के स्पोर्स दिखाई देते है। अधिक प्रकोप होने पर पौधों के पत्ते झड़ जाते है। इस रोग के नियंत्रण के लिए रिडोमिल एम जैड (0.3 प्रतिशत घोल) के तीन छिड़काव या डाईमेथेन एम – 45 के 0.2 प्रतिशत घोल के पांच छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करने चाहिए।

उकटा रोग

इस रोग के ग्रस्त होने पर नवोदभिद पौधे मुरझाकर गिर जाते हैं तथा पुराने पौधे रोग होने पर अचानक सूख जाते हैं। रोग ग्रस्त पौधों के कोलर क्षेत्र में वैसकुलर बंडल पीले या भूरे हो जाते है। इस रोग का नियंत्रण कठिन होता है क्योंकि यह भूमिगत रोग है इस रोग से बचाव के लिए पौधो को कैप्टान (0.2 प्रतिशत) के घोल से अच्छी प्रकार भिगोना चाहिऐ।

एन्थक्नोज

आरम्भ में इस रोग से ग्रस्त पौधों की पत्तियों , तनों व डंठलों पर छोटे पीलें रंग या जल भरे धब्बे दिखाई देते है जो बाद में मिलकर बडें धब्बे बन जाते है। लौकी व तरबूज में यह रोग फलों पर भी लगता है। फलों पर खुरदरें, गोलाकार, सिकुडें हुए जलभरें धब्बे बन जाते है। इस रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेंब (0.25 प्रतिशत घोल) या कार्बन्डेजिम (0.1 प्रतिशत) घोल का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

विषाणु रोग

विषाणु रोग का फैलाव चेपा या श्वेत मक्खी द्वारा होता है। रोग ग्रस्त पौधों की पत्तियां सिकुड जाती है या उनमें काले रंग के धब्बे या पत्तियों की सिराएं पीले रंग की हो जाती है। रोग की अधिकता में पौधों की बढ़वार रूक जाती हैं और फलन भी नहीं होता है। इस रोग से बचाव के लिए बुवाई के समय ही कार्बोफ्यूरान 1.5 कि.ग्रा/है. की दर से थमलों में मिलाना चाहिए। पौधों में आरम्भिक लक्षण दिखातें ही उसे उखाडकर नष्ट कर देना चाहियें। रोग के फैलाव को रोकने के लिए डाईमिथोयेट या फोसफामिडोन (0.05 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।